दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
DSSSB TGT & PGT
ROJGAR ANKIT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
प्रत्यय
Part -3
LIVE
30-05-2024 05:00 PM

6

7 जून off

8

13

14 जून off

15

अव्यय	क्त्वा	त्वा			पठित्वा, गत्वा
	ल्यप्	अ० य			आगम्य विज्ञाय
	तुमुन्	तुम्			पठितुम् खादितुम्
वर्तमान काल की निरंतरता	शतृ	अन्	अन्ती	अत्	पठन्, लिखन्ती खादत्
	शानच्	मानः	माना	मानम्	सेवमानः, पठमाना, लभमानम्
भूतकाल	क्त	तः	ता	तम्	गतः, गता गतम्
	क्तवतु	वान्	वती	वत्	पठितवान्, लिखितवती, गतवत्
चाहिए अथवा योग्य	तव्यत्	तव्यः	तव्या	तव्यम्	पठितव्यः
	अनीयर्	अनीयः	अनीया	अनीयम्	पठनीयः
नपुंसकलिंग	ल्युट्	अनम्			गमनम्, खादनम्

ध्यातव्य

लट्	अ	
लिट्	इ	
लुट्	उ	⇒ टित्
लृट्	ऋ	
लेट्	ए	
लोट्	ओ	
लङ्	अ	ङित्
लिङ् (विधि / आशीः)	इ	
लुङ्	उ	
लृङ्	ऋ	

क्त क्तवतु

सामान्य परिचय -

* क्त और क्तवतु दोनों प्रत्यय 'कृदतिङ्' के अधिकार में पढ़े गये हैं, अतः कृत्संज्ञक हैं। ये दोनों प्रत्यय सामान्यतः भूतकाल में प्रयुक्त होते हैं । अतः इनसे बने शब्दों को 'भूतकृदन्त' भी कहा जाता है।

* कृत्संज्ञक प्रत्यय 'कर्तरि कृत्' द्वारा कर्ता अर्थ में हुआ करते हैं, परन्तु क्त, क्तवतु इनमें केवल 'क्तवतु' प्रत्यय ही कर्ता अर्थ में होता है । क्त प्रत्यय 'तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः' सूत्र से भाव और कर्म में ही होता है। यदि धातु

अकर्मक हो तो क्त प्रत्यय भाव अर्थ में और यदि धातु सकर्मक हो तो क्त प्रत्यय कर्म अर्थ में होगा, परन्तु क्तवतुं प्रत्यय धातु के सकर्मक या अकर्मक होने पर केवल कर्ता अर्थ में ही होता है।

* क्तक्तवतूं निष्ठा (1.1.25) सूत्र से क्त, क्तवतुं प्रत्यय की 'निष्ठा' संज्ञा होती है ।

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

सूत्र- 'निष्ठा' (3.2.102)

सूत्रार्थ - भूतकालिक अर्थ में धातु के बाद निष्ठासंज्ञक क्त, क्तवतु प्रत्यय हों।

जैसे- स्नातं मया (मुझसे नहाया गया)

सिद्धि प्रक्रिया -

स्ना + क्त - 'स्ना' इस अकर्मक धातु से भूतकाल अर्थ में 'निष्ठा' सूत्र से भाव अर्थ में ' क्त' प्रत्यय हुआ ।

स्ना + त - 'लशक्वतद्धिते' से ' क्त' के ककार की इत् संज्ञा होकर 'तस्य लोपः' से लोप हुआ।

स्नात - 'आर्धधातुकस्येड् वलादेः' सूत्र से प्राप्त 'इट्' का 'एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् ' से निषेध करने पर 'स्नात' बना ।

स्नातसु - कृदन्त होने के कारण प्रातिपदिक संज्ञा होकर प्रथमैकवचन में सुं प्रत्यय ।

स्नात अम्- 'सामान्ये नपुंसकम्' द्वारा नपुंसकलिङ्ग की विवक्षा में 'अतोऽम्' सूत्र से 'सुं' को 'अम्' आदेश

स्नातम् - 'अमि पूर्वः' से पूर्वरूप एकादेश करके 'स्नातम् ' प्रयोग सिद्ध हुआ

'स्नातम्'- इति सिद्धम् - अनुक्त होने से 'स्नातम्' के कर्ता में 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' सूत्र से तृतीया विभक्ति हो जाती है। अतः 'मया स्नातम्' ऐसा वाक्य सिद्ध हुआ ।

कृ + क्तवत् - कृतवान्

विश्वं कृतवान् विष्णुः (विष्णु ने विश्व को बनाया)

क्त - क्तवतु से सम्बद्ध कुछ विशेष नियम

* रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः (8.2.42) र् और द् के बाद आने वाला निष्ठा प्रत्यय (क्त, क्तवतु) का त् 'न्' के रूप में परिवर्तित हो जाता है, तथा पूर्व में स्थित दकार भी नकार के साथ में परिवर्तित हो जाता है।

जैसे -

शीर् (शॄ) + क्त = शीर्णः

भिद् + क्त = भिन्नः

छिद् + क्त = छिन्नः

*** संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः (8.2.43)** - ऐसी धातु जिनका अन्तिम वर्ण दीर्घ 'आ' हो तथा जिनके आदि में संयोग हो तथा जो धातु यण् वाली हो। जैसे- 'ग्ला' इस धातु के आरम्भ में संयोग है अतः संयोगादि है, आकारान्त भी है तथा 'यण' वाली भी है । इन तीन विशेषताओं से युक्त धातु के बाद आने वाले क्त क्तवतु के 'त्' को 'न्' हो जाता है।

जैसे-

ग्ला + क्त = ग्लानः

द्रा + क्त = द्राणः

म्ला + क्त = म्लानः

ग्ला + क्तवतु = ग्लानवान्

द्रा + क्तवतु = द्राणवान्

म्ला + क्तवतु = म्लानवान्

* ल्वादिभ्यः - (8.2.44) लू आदि 21 धातुओं के बाद आने वाला निष्ठा (क्त, क्तवतु) का तकार नकार के रूप में बदल जाता है।

जैसे-

लू + क्त = लूनः, | लू + क्तवतु = लूनवान्

धू + क्त = धूनः, | धू + क्तवतु = धूनवान्

द्रू = द्रूनः, द्रूनवान्, | ज्या+ जीनः,= जीनवान

*** ओदितश्च -** (8.2.45) ऐसी धातुयें जिनमें 'ओ' की इत्संज्ञा हुई हैं, वे ओदित् कहलाती हैं, जैसे भुजो टुओश्वि इत्यादि ओदित् धातुओं के बाद आने वाले क्त क्तवतु के 'तू' को 'न्' हो जाता है।

जैसे

भुजो (भुज्) = भुग्नः / भुग्नवान्

टुओश्वि (श्वि) = शूनः / शूनवान्

ओहाक् (हा) = हीनः / हीनवान्

रुजो (रुज्) = रुग्णः / रुग्णवान्

उद् + ओविजी (विज्) = उद्विग्नः / उद्विग्नवान्

शुषः कः (8.2.51) - शुष् धातु के बाद आने वाले निष्ठा (क्त, क्तवतु) के 'त्' को 'क्' हो जाता है

यथा-

शुष् + क्त = शुष्कः

शुष् + क्तवतु = शुष्कवान्

*** पचो वः (8.2.52)** 'पच्' धातु के बाद आने वाले निष्ठा (क्त, क्तवतु) के 'त्' को 'व्' हो जाता है।

जैसे-

पच् + क्त = पक्वः ('चोः कुः' से कुत्व)

पच् + क्तवतु = पक्ववान्

* क्षायो मः (8.2.53) 'क्ष' धातु के बाद आने वाले निष्ठा (क्त, क्तवतु) के 'त्' को 'म्' हो जाता है।

क्षै (क्षा) + क्त = क्षामः

क्षै (क्षा) + क्तवतु = क्षामवान्

परीक्षोपयोगी प्रश्न

* छिन्नः, भिन्नः में प्रत्यय है - क्त ।

* 'शुष् + क्त = शुष्कः' में तकार को ककार आदेश किस सूत्र से = शुषः कः ।

* 'पक्वः' में निष्ठासंज्ञक क्त के तकार के स्थान पर वकार आदेश किस सूत्र से = 'पचो वः'

* क्षा + क्तवतु से पद बनेगा = क्षामवान् ।

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

1. अनीयर् प्रत्यययोगाद् निष्पन्नं पदमस्ति **UP PGT Sanskrit-2021**

(a) चेयम्

(b) चेतव्यः

(c) चयनीयः

(d) एधितव्यम्

चि + अनीयर्

अय्

2. एषु कस्मिन् पदे 'क्तवतु' प्रत्ययस्य प्रयोगः नास्ति ?

(a) उक्तवान्

(b) निन्दितवान्

(c) नीयमानः

(d) शयितवान्

Haryana PGT Exam.-2020

3. "गायन्ती" इत्यस्य पदपरिचयं स्यात् - **Haryana PET From 2020**

(a) गै + शतृ + स्त्री. + एकवचनम्

(b) गै + लट् + प्र. पु. बहुवचनम्   गायन्ति

(c) गा + शानच् + स्त्री. + एकवचनम्

(d) एषु कोऽपि सम्यक् नास्ति

4. 'क्री + तुमुन्' योगेन पदम् स्यात् **Haryana PGT Exam. - 2020**

(a) कर्तुम्

(b) क्रेतुम्

(c) करितुम्

(d) क्रीतुम्

तुमुन्

आदि स्वर → गुण

इ = ए = चि + तुमुन् = चेतुम्

उ = ओ = श्रु + तुमुन् = श्रोतुम्

ऋ = अर् = कृ + तुमुन् = कर्तुम्

5. 'दृश्' धातोः तुमुन् प्रत्यये रूपं भवति- **DSSSB TGT (Male) - 2021**

(a) दर्शयितुम्

(b) द्रष्टुम्

(c) ष्टुम्

(d) दृश्तुम्

6. 'छात्रैः गुरुणां वचनानि सदैव (श्रोतव्यानि)। अत्र कोष्ठकप्रदत्तपदस्य प्रकृतिप्रत्ययौ विभज्य उचितमुत्तरं चिनुत्'

(a) श्रु+तव्यत्

(b) श्रोतव्य + आनि

(c) श्रोत+अव्यानि

(d) श्रो+तव्यानि

DSSSB TGT(Male) - 2021

श्रु + तव्यत् = तव्यः तव्या तव्यम्

लिख् = लेखितव्यः

चि = चेतव्यः

श्रु = श्रोतव्यः

कृ = कर्तव्यः

7. 'नी 'धातोः ल्युट् प्रत्यये रूपं भवति- **DSSSB TGT(Male)-2021**

(a) नयनम्

(b) नेअन

(c) नीअन

(d) नयअन

ल्युट् = यु = अन (नपुंस.)

भू + ल्युट् (अनम्)

ओ = अत् आतण्

नी + अनम्

ए → अय् = नयनम्

चि + ल्युट् = चयनम्

भू (ओ) + अनम्

= भवनम्

8. 'पठ्' धातोः शतृप्रत्यये सति स्त्रीलिङ्गे किं रूपं भवति ?

(a) पठत्

(b) पठन्

(c) पठन्ती

(d) पठति

अत् अन्ती अत्

DSSSB TGT(Male)-2021